RNI No. : DELBIL/2005/15122
D.L. No. : DL (S)-01/3362/2016-18

विद्याभारती संकुल संवाद

मासिक पत्रिका
E-mail : vbsankulsamvad@gmail.com

वर्ष-15 अंक 1 दिसंबर 2018 विक्रमी सं. 2075 मूल्य : एक रुपया

अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव का कुरुक्षेत्र में हुआ आयोजन

देश भर से पधारे भारतीय संस्कृति, इतिहास, धरोहर, धर्मग्रंथ, कला व चरित्र के मर्मज्ञ

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र द्वारा कार्तिक पूर्णिमा से मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीया, विक्रमी संवत् 2075 (23 से 25 नवम्बर 2018) को अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव का आयोजन किया गया। इस आयोजन में देशभर से छात्र-छात्राएँ, आचार्य शिक्षक वृंद, संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रदेश के संयोजक, क्षेत्र संयोजक, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के अधिकारीगण एवं आमंत्रित अतिथियों के अतिरिक्त नगर के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। महोत्सव में जहाँ हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी के सौजन्य से लगाई गई संस्कृति दीर्घा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के दर्शन हुए, वहीं संस्कृति ज्ञान प्रश्न-मंच, सांस्कृतिक विषयों पर पत्र-वाचन जैसे कार्यक्रमों से छात्र भैया-बहनों की प्रतिभा देखने को मिली। भारत की गौरवशाली संस्कृति पर आयोजित संस्कृति वार्ता में जहाँ प्रमुख विद्वानों ने भारतीय संस्कृति से अवगत कराया, वहीं हरियाणा धरोहर व कुरुक्षेत्र-दर्शन कर देशभर से आए प्रतिभागी एवं अध्यापकगण गद्गद् हो गए।

23 नवम्बर को अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव के शुभारंभ के समय हरियाणा के माननीय राज्यपाल श्रद्धेय सत्यदेव नारायण आर्य ने भारत दर्शन-संस्कृति दीर्घा का लोकार्पण किया। हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी के सौजन्य से आयोजित संस्कृति दीर्घा का अवलोकन कर राज्यपाल ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। आध्यात्मिक, पुरातात्त्विक, दार्शनिक सहित विभिन्न आयामों को संजोए प्रदर्शनी को मुख्य रूप से 10 खण्डों में विभाजित किया गया। इसके साथ-साथ हरियाणा का इतिहास तथा पुरातात्त्विक अवशेषों को भी प्रदर्शित किया गया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय कर्णदेव काम्बोज, मंत्री, खाद्य एवं आपूर्ति तथा वन विभाग, हरियाणा एवं नगर परिषद् की अध्यक्षा उमा सुधा उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष माननीय गोविंद प्रसाद शर्मा ने की। इस अवसर पर विद्या भारती के संरक्षक माननीय ब्रह्मदेव शर्मा, संस्कृति शिक्षा संस्थान के उपाध्यक्ष श्री नरेंद्रजीत सिंह रावल एवं वि.भा.अ.भा.शि.संस्थान के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी उपस्थित रहे। इस अवसर पर हरियाणा के राज्यपाल सत्यदेव नारायण आर्य ने कहा कि कुरूक्षेत्र में विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित इस महोत्सव में उपस्थित होकर मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूँ।

महोत्सव में विशिष्ट अतिथि के रूप में कर्णदेव कम्बोज, मंत्री, खाद्य एवं आपूर्ति तथा वन विभाग, हरियाणा ने कहा कि भारत एक ऐसा देश है, जिसकी संस्कृति की पहचान पूरी दुनियाँ में है। भारत में संस्कारों की शिक्षा बचपन से ही दी जाती है तथा इस कार्य को विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. गोविंद प्रसाद शर्मा ने राष्ट्रीय चरित्र के बारे में विस्तार से जानकारी दी। महामहिम राज्यपाल ने भारतीय संस्कृति को अपना सारा जीवन समर्पित कर उत्कृष्ट कार्य करने के लिए डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा तथा चित्रकला के मर्मज्ञ कलाविभूति श्री वी.पी. वर्मा को सम्मानित किया। कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों का स्वागत तथा परिचय विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के सचिव श्री अवनीश भटनागर ने किया तथा धन्यवाद महोत्सव के संयोजक डा. रामेन्द्र सिंह ने किया। महोत्सव में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।

24 नवम्बर को संस्कृति वार्ता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता अंबाला रेंज के कमिश्नर श्री आर. सी. मिश्रा रहे, जबकि विषय प्रस्तोता हरियाणा साहित्य

अकादमी की निदेशक डॉ. कुमुद बंसल रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह–विभाग कार्यवाह डॉ. प्रीतम सिंह ने की।

25 नवम्बर को महोत्सव के समापन समारोह में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्रद्धेय आचार्य डॉ. देवव्रत मुख्यातिथि रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में थानेसर के विधायक श्री सुभाष सुधा रहे, जबकि अध्यक्षता विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष माननीय गोविंद प्रसाद शर्मा ने की। इस अवसर पर विद्या भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री जे. एम. काशीपति, राष्ट्रीय महामंत्री श्री ललित बिहारी गोस्वामी, सहसंगठन मंत्री श्री श्रीराम आरावकर, संस्कृति शिक्षा संस्थान के उपाध्यक्ष श्री नरेंद्रजीत सिंह रावल एवं सचिव श्री अवनीश भटनागर भी उपस्थित रहे।

समारोप कार्यक्रम में राज्यपाल आचार्य डॉ. देवव्रत ने कहा कि भारतीय संस्कृति पूरे विश्व को शांति का पाठ पढ़ा रही है। इस देश की माटी के कण–कण में संस्कृति और संस्कार समाए हुए हैं और इसी धरा पर वेदों की रचना हुई। इन वेदों के एक–एक शब्द में संस्कृति और संस्कारों की महक आती है। इस महक से ही पूरे विश्व को ज्ञान और संस्कारों की शिक्षा भी मिल रही है। माननीय राज्यपाल ने भारत की युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति और संस्कारों से आत्मसात करवाने के उद्देश्य से आयोजित अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव के आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि बालक और बालिका ही हमारे राष्ट्र की पूंजी हैं।

विद्या भारती के अध्यक्ष डॉ. गोविंद प्रसाद शर्मा ने इस तीन दिवसीय महोत्सव की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत की संस्कृति महान होने के साथ–साथ विश्व में सबसे प्राचीन है। जिस देश की संस्कृति मजबूत होगी, वह देश सांस्कृतिक मूल्यों के साथ–साथ तमाम क्षेत्रों में मजबूत होगा। इस दौरान महामहिम राज्यपाल ने प्रतियोगिताओं में विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र को ओवरऑल चैंपियन की ट्रॉफी तथा अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान प्रश्न–मंच एवं पत्र–वाचन प्रतियोगिता के विजेताओं को स्मृति चिह्न व प्रशंसा–पत्र देकर सम्मानित किया।

राज्यपाल ने इस अवसर पर विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा प्रकाशित 'बापू से सीखें....' पुस्तक का विमोचन भी किया। पुस्तक के लेखक डॉ. वेद मित्र शुक्ल जी भी उपस्थित रहे। महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में पुस्तक का प्रकाशन संस्थान द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संख्यात्मक वृत्त निम्नवत है –

क्र.	क्षेत्र	प्रश्न–मंच			छात्र पत्र–वाचन			आचार्य पत्र–वाचन			योग भैया, बहिन व आचार्य	सर्वयोग भैया	सर्वयोग बहिन	आचार्य/संरक्षक संख्या	सर्वयोग
		भैया	बहिन	योग	भैया	बहिन	योग	भैया	बहिन	योग					
1	विद्या भारती उत्तर पूर्व क्षेत्र	9	3	12	1	3	4	1	0	1	17	11	6	7	24
2	विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र	10	2	12	3	0	3	0	0	0	15	13	2	4	19
3	विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र	4	5	9	3	0	3	1	0	1	13	8	5	6	19
4	विद्या भारती पूर्व क्षेत्र	10	2	12	2	0	2	0	1	1	15	12	3	6	21
5	विद्या भारती पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र	10	2	12	4	1	5	1	0	1	18	15	3	9	27
6	विद्या भारती मध्य क्षेत्र	10	2	12	2	2	4	0	1	1	17	12	5	8	25
7	विद्या भारती उत्तर क्षेत्र	6	6	12	1	3	4	1	0	1	17	8	9	10	27
8	विद्या भारती दक्षिण मध्य क्षेत्र	3	6	9	0	3	3	0	1	1	13	3	10	8	21
9	विद्या भारती दक्षिण क्षेत्र	5	4	9	1	1	2	1	0	1	12	7	5	6	18
10	विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र	1	2	3	0	2	2	0	0	0	5	1	4	3	8
	योग	68	34	102	17	15	32	5	3	8	142	90	52	67	209

डॉ० रामेन्द्र सिंह

प्रतियोगिता में एक जीतता है और एक सीखता है – श्री तोमर

मध्य क्षेत्र की दो दिवसीय खेल समारोह का आयोजन

सरस्वती शिशु मंदिर उ.मा.वि. शुजालपुर मण्डी में दो दिवसीय क्षेत्रीय हूपक्वांडो व टेंग शुडो खेल समारोह का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन की अध्यक्षता श्री अशोक अत्रे ने की। मंचासीन अतिथियों में कैलाश धनगर प्रांतीय शारीरिक व खेल प्रमुख मालवा प्रांत, लोकेन्द्र सिंह तोमर (सचिव, प्रदेश आर्चरी फेडरेशन), हुकुमसिंह धनगर (सचिव, महाविद्यालय स्थापना समिति) रहे। कार्यक्रम का प्रारम्भ माँ सरस्वती व भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। कैलाश धनगर ने कार्यक्रम की भूमिका रखते हुए कहा कि इस क्षेत्र स्तरीय खेल समारोह में विद्या भारती के 4 प्रांतों–मालवा, मध्यभारत, महाकौशल व छत्तीसगढ़ के 300 भैया बहिन व 20 प्रशिक्षक सम्मिलित हुए। विद्या भारती का एस.जी.एफ.आई. में प्रदर्शन लगातार बेहतर हो रहा है और एस.जी.एफ.आई. के 41 स्टेट में विद्या भारती को 11वां स्थान प्राप्त हुआ है। आर्चरी फेडरेशन के सचिव श्री तोमर ने कहा कि युक्ति, बुद्धि एवं शक्ति से परिपक्व खिलाड़ी ही प्रतियोगिता में सफल होता है। प्रतियोगिता में एक जीतता है और एक सीखता है। कड़ी मेहनत व कठोर अनुशासन से अच्छे खिलाड़ी का निर्माण होता है। उन्होंने कहानी के माध्यम से गुर व अभ्यास का महत्त्व भी समझाया। खेल खेलते–खेलते खिलाड़ी को कई प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं। कार्यक्रम को हुकुमसिंह धनगर व अशोक अत्रे ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर खेल जगत से जुड़े नगर के गणमान्य नागरिक व विद्यालय परिवार की उपस्थिति रही।

प्रवीण नागजी, प्रचार प्रमुख।

बालिकाओं में अन्तर्निहित शक्तियों के विकास से ही परिवार, समाज व देश का निर्माण

- रेखा चुड़ासमा

विद्या भारती शिक्षा संस्थान, जोधपुर प्रान्त द्वारा तीन दिवसीय (दिनांक 16 से 18 नवम्बर 2018) प्रांतीय कन्याभारती कार्यकर्ता शिविर, बालिका आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित हुआ। शिविर में 12 जिलों से 34 बालिका विद्यालयों की 190 बालिकाएँ दायित्वानुसार पदाधिकारी (अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मन्त्री, सहमन्त्री, कोषाध्यक्ष एवं सेनापति) एवं 30 प्रभारी आचार्या एवं 16 प्रधानाचार्याओं ने सहभागिता की।

शिविर का श्रीगणेश करते हुए अखिल भारतीय बालिका शिक्षा प्रमुख रेखा चुड़ासमा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि बालिकाओं में अंतर्निहित शक्तियों के विकास से ही परिवार, समाज व देश का निर्माण सम्भव होगा।

मुख्य अतिथि डॉ. अनुराधा शर्मा (आचार्या एम्स) ने कहा कि सबसे अच्छे गुणों को प्रोत्साहन देना, सही राह दिखाना, अपने जीवन में जो भी प्रेरणा मिले, उसे सभी में बांटना एक अच्छे लीडर का कार्य है। हमेशा अपनी सोच सही व बड़ी रखें। स्वामी विवेकानन्द जी के वचन ''उठो, जागो, लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ो'' का उदाहरण सहित स्पष्ट करते हुए कहा कि चलता है, हो जायेगा, कल कर लेंगे, यह विचार व्यक्ति के आगे बढ़ने में सबसे बड़ी बाधा है।

शिविर में अनुबंध संस्थान की निदेशिका अनुराधा आडवाणी ने कहा कि हमारे समाज में दया का भाव बढ़ते रहना चाहिए, दूसरों के बारे में सोचें, ऐसा व्यवहार करें जो हम अपने लिए चाहते हैं। उन्होंने आगे कहा कि बालिकाएँ ईश्वर की वह कृति है जो विश्व का सृजन करती है। बालिका भावी समाज की कर्णधार होती है।

इस शिविर में विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री शिव प्रसाद ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि कन्याभारती के माध्यम से बालिकाओं की क्षमता व योग्यता के विकास से समर्पण का भाव बढ़ेगा और तभी समाज आगे आकर सहयोग के लिए तत्पर रहेगा, यही दृढ़ संकल्प लेकर ही शिखर तक पहुँच सकते हैं।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. श्रीमती विनोद कटारिया ने बताया कि आज के युग में किशोर बालिकाओं में नई ऊर्जा को देखती हूँ जो जीवन के प्रति जो विचार है उसे उजागर करना। समय पालन जीवन में अनुशासन से ही आगे बढ़ सकते हैं। परीक्षा पास करना शिक्षा नहीं, शिक्षा वह है जो जीवन में अपने अनुभवों से सीखते हुए आगे बढ़ना। प्रत्येक व्यक्ति को अपना सर्वस्व लगा देना चाहिये वो भी प्रथम वरीयता से चाहे कोई भी काम दिया गया हो।

बालिका शिक्षा की प्रान्त सह प्रमुख नीलम पंवार ने बताया कि बालिकाओं में नैसर्गिक गुणों का संवर्धन, त्याग, बलिदान, शौर्य, सहनशीलता, आत्मीयता, ममत्व, का स्वाभाविक विकास होगा तभी देश-समाज की रक्षा होगी। इसी प्रकार एक सत्र में विभागानुसार रंगीला राजस्थान के प्रोजेक्ट में बालिकाओं ने राजस्थान के इतिहास, धार्मिक, सांस्कृतिक, स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, लोक-देवता, लोक-कला, लोक-परम्पराओं एवं लोक-गीतों का अभ्यास हुआ। समापन सत्र में मंच संचालन बालिकाओं के द्वारा ही किया गया। बहिन अभिलाषा स्वामी ने अपनी कविता बेटी बचाओ के माध्यम से सभी का हृदय मोह लिया।

शिविर में राजस्थान क्षेत्र की बालिका शिक्षा प्रमुख प्रमिला शर्मा, राष्ट्र सेविका समिति की प्रांत प्रचारिका रितु शर्मा, स्थानीय समिति के सभी पदाधिकारी एवं प्रान्त के छः विभागों की बालिका शिक्षा की विभाग प्रमुख का मार्गदर्शन मिला।

(गंगाविष्णु बिश्नोइ)
प्रान्त निरीक्षक, विद्या भारती शिक्षा संस्थान, जोधपुर।

ज्वाला देवी के छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहराया

प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) शिक्षा प्रसार समिति के द्वारा संचालित ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज सिविल लाइन्स के अखिल भारतीय विद्या भारती शिक्षण संस्थान द्वारा पं. बच्छराज व्यास आदर्श विद्या मन्दिर, सुभाष सर्किल डीडवाना, राजस्थान में 26, 27 नवम्बर 2018 को आयोजित लॉन टेनिस की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के बाल वर्ग में ज्वालादेवी सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज के छात्र आशुतोष पाण्डेय, अनुज पाण्डेय एवं हर्ष सिंह ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में विद्या भारती के अनुसार पूरे देश के 11 क्षेत्रों के लगभग 500 खिलाड़ी छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। छात्रों की इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि से न केवल विद्यालय व शहर का अपितु पूरे पूर्वी उ.प्र. क्षेत्र का मान बढ़ाया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री युगल किशोर मिश्र जी ने विजेता छात्रों को वन्दना सभा में सम्मानित किया।

छात्रों की इस उपलब्धि पर विद्यालय के अध्यक्ष, प्रबंधक, कोषाध्यक्ष, क्षेत्रीय संगठन मंत्री, प्रदेश निरीक्षक, क्षेत्रीय शारीरिक प्रमुख तथा विद्यालय परिवार ने सभी विजेता छात्रों को बधाई दी एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

विद्यालय प्रधानाचार्य।

शिशु मंदिर के छात्र हर्षवर्धन तोमर को तीरदांजी में नेशनल गोल्ड अवार्ड

सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शुजालपुर मंडी (म.प्र.) के भैया हर्षवर्धन तोमर, पिता श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने दिनांक 13.11.2018 से 17.112018 तक शिवपुरी में आयोजित 64वीं राष्ट्रीय तीरदांजी प्रतियोगिता (SGFI) में विद्या भारती का प्रतिनिधित्व करते हुए फील्ड आर्चरी अंडर 19 वर्ष के रिकर्व राउण्ड टीम इवेंट में गोल्ड मेडल एवं सिंगल स्वाट में सिल्वर मेडल प्राप्त किया। इस प्रकार भैया हर्षवर्धन ने एक गोल्ड और 1 सिल्वर मेडल विद्या भारती के लिए प्राप्त किया। हर्षवर्धन की इस उपलब्धि पर विद्या भारती मालवा, महाविद्यालय स्थापना समिति, शुजालपुर एवं सरस्वती शिशु मंदिर परिवार ने भैया हर्षवर्धन तोमर और उनके कोच वीरभद्र सिंह तोमर को शुभकामनाएँ दी एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अखिल भारतीय योगासन प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

विद्या भारती के तत्त्वावधान में चार दिवसीय अखिल भारतीय राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 24 से 27 नवंबर 2018 तक गीता बाल भारती विद्यालय, राजगढ़ कॉलोनी, दिल्ली के प्रांगण में किया गया। इस राष्ट्रीय योगासन प्रतियोगिता में 11 क्षेत्रों से 150 छात्र तथा 128 छात्राओं ने भाग लिया। इनके साथ 57 संरक्षक आचार्य भी उपस्थित रहे। इस प्रतियोगिता में विजेताओं को 119 मैडल प्रदान किए गए, जिसमें लगभग सभी क्षेत्रों के प्रतिभागी विजयी रहे। आर्टिस्टिक योग छात्राओं के अंडर-14 आयु वर्ग में मध्य क्षेत्र से प्रथम स्थान पर रहीं। दक्षिण मध्य क्षेत्र से अंडर-14 आयु वर्ग के भैया प्रथम स्थान पर रहे। बिहार क्षेत्र से अंडर-17 आयु वर्ग की बहनें प्रथम स्थान पर रहीं तथा दक्षिण क्षेत्र से अंडर-17 आयु वर्ग में प्रथम रहे। पूर्वी उत्तरप्रदेश से अंडर-19 आयु वर्ग की बहिनें तथा दक्षिण मध्य क्षेत्र से अंडर-19 आयु वर्ग के भैया प्रथम स्थान पर रहे। संगीतमय योगासन में दक्षिण मध्य क्षेत्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। पूर्वी उत्तर क्षेत्र के प्रतिभागियों ने अनुशासन के क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मा. दीपक मल्होत्रा (निगम पार्षद, घौण्डली) रहे। मा. पन्ना लाल जी, सुरेन्द्र अत्री, श्री हेमचन्द्र जी आदि गणमान्य विभूतियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री सुरेन्द्र जी अत्री ने समारोह का वृत्त प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि विद्या भारती केवल शिक्षा द्वारा ही नहीं, बल्कि पंचकोषीय पद्धति से भी विद्यार्थियों का विकास करती है। उन्होंने गुरुनानक देव जी एवं भाऊराव देवरस जी के संस्मरण सुनाकर उनका अनुकरण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि योग एक धर्म नहीं अपितु एक विज्ञान है। वन्देमातरम के साथ कार्यक्रम समापन हुआ।

मीडिया संयोजक, रचना गुप्ता।

पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति की कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

पूर्वोत्तर के जनजाति अंचलों में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति की कार्यकारिणी बैठक गुवाहाटी में सम्पन्न हुई। कार्यकारिणी बैठक की अध्यक्षता श्री सदादत्त जी ने की। विद्या भारती के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष श्री दिलीप बेतकेकर विशेष रूप से उपस्थित रहे। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति व पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति के संरक्षक डॉ. निर्मल कुमार चौधरी भी इस बैठक में उपस्थित रहे।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के जनजाति अंचलों में 87 विद्यालय, 32 आवासीय विद्यालय व 567 एकल विद्यालय समिति द्वारा संचालित हैं। इस अवसर पर पिछले छह महीने की कार्य प्रगति की समीक्षा की गई तथा नए शैक्षिक वर्ष में नए स्थानों पर विद्यालय प्रारंभ करने के लिए चर्चा की गई। 14 से 24 फरवरी तक सभी विद्यालयों में सूर्यनमस्कार के सामूहिक कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया। शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं को दिया जाने वाला कृष्णचन्द्र गाँधी पुरस्कार आगामी फरवरी/मार्च में प्रदान करने का निर्णय भी लिया गया।

श्री दिलीप बेतकेकर ने कहा कि शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय एकात्मता का भाव जगाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने मोबाईल लैबोरेटोरी के बारे में कहा कि इसके माध्यम से पिछड़े क्षेत्रों में भी छात्रों के मन में विज्ञान के प्रति रूचि पैदा की जा सकती है। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. निर्मल कुमार चौधरी ने एकल विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए चिन्ता करने तथा व्यावहारिक शिक्षा देने हेतु पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों से आए प्रांतीय कार्यकर्ताओं से आग्रह किया।

प्राणजीत पुजारी,
सह मंत्री पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति।

शंकरदेव शिशु निकेतन के 2 पूर्व-छात्र का हुआ असम लोक सेवा आयोग में चयन

विद्या भारती से सम्बद्ध शिशु शिक्षा समिति, असम द्वारा संचालित शंकरदेव शिशु निकेतन के दो पूर्व छात्र ने अपनी कठोर परिश्रम कर ए.पी.एस.सी. की परीक्षा में पच्चीसवाँ स्थान पर रहकर सफलता प्राप्त की है। श्री मानवेन्द्र भराली ने असमिया भाषा के माध्यम से हाई स्कूल की पढ़ाई पूर्ण की। उनका चयन असम लोक सेवा हेतु हुआ है। मानवेन्द्र के अभिभावक एवं परिवार के अन्य लोग उनकी इस सफलता पर खुश हैं।

इसी प्रकार बसंतलता विशेश्वर शंकाकोटि मेमोरियल शंकरदेव शिशु निकेतन लखीमपुर की पूर्व छात्रा सुश्री स्मिता भारद्वाज ने भी असम लोक सेवा आयोग की परीक्षा में अपनी कठोर परिश्रम से यह विशेष सफलता प्राप्त की है। सुश्री स्मिता के अभिभावक उनकी इस सफलता से बड़े खुश हैं और वे चाहते हैं कि उनकी बेटी समाज हित का कार्य करते हुए सरकार में अपनी सेवाएँ दे। स्मिता का चयन रोजगार अधिकारी के पद पर हुआ है।

विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री यतीन्द्र जी शर्मा व अन्य अधिकारियों ने दोनों को राज्य व राष्ट्र की सेवा करने के लिए शुभकामनाएँ दी है।

विकास शर्मा,
क्षेत्रीय कार्यालय मंत्री असम।

विद्या भारती हरियाणा कला संगम महाकुम्भ

कलाएँ ही जीवन को वास्तव में जीवन्त बनाती है एवं कला एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा कलाकार अपनी बात बड़े ही सहज तरीके से कह सकता है। इसी कला के गुर विद्यार्थी में डालने के लिए विद्या भारती हरियाणा द्वारा दो दिवसीय (29 से 30 अक्टूबर) कला-संगम महाकुंभ का आयोजन शिक्षा भारती विद्यालय (छात्रा विद्यालय) रामनगर, रोहतक में किया गया। इसमें 390 विद्यार्थियों ने कला व संगीत, कपड़ा रंगाई, कविता, एकल गायन, लोक-नृत्य, वादन हरियाणवी लोकगीत, शास्त्रीय गायन व नुक्कड़ नाटक आदि अनेक कलाओं का प्रदर्शन किया।

उदघाटन सत्र में श्री रवि कुमार (सह संगठन मंत्री, हरियाणा) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि कलाएँ ही वास्तव में जीवन को जीवन्त बनाती है। तत्पश्चात् वर्गानुसार अनेक गतिविधियाँ कराई गई। श्रीमती सुनीता रूहिल (जिला शिक्षा अधिकारी, रोहतक) ने सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने हेतु कला-संगम कार्यक्रम को उत्कृष्ट माध्यम बताया। उन्होंने शिक्षा भारती विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम के समापन में कई सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे- शास्त्रीय गायन, वादन की मंत्रमुग्ध कर देने वाली प्रस्तुतियाँ दी गई।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री बालकिशन जी (संगठन मंत्री वि.भा. हरियाणा) ने इस अवसर पर कहा कि बच्चों के अन्दर अनेक प्रकार की प्रतिभाएँ छिपी होती है जो कई बार अवसर के अभाव में विकसित नहीं हो पाती है। इस अवसर पर प्रो. राजबीर सिंह (कुलपति- राज्य प्रदर्शन एवं दृष्यकला विश्वविद्यालय, रोहतक) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि कला-संगम एक ऐसा कार्यक्रम है जो बच्चों को अपनी छिपी हुई प्रतिभा को उभारने और निखारने का अवसर देता है।

'नन्हें कदम दक्षता की ओर'

दक्षता या कौशल विकास का माता लीलावंती सरस्वती विद्या मंदिर में अभिनव प्रयोग

दक्ष भारती की प्रेरणा से माता लीलावंती विद्या मंदिर, दिल्ली में गत दो माह से बच्चों में कौशल का विकास करने के लिए अभिनव प्रयोग किया जा रहा है। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मधु गुप्ता जी ने विद्यालय में प्रत्येक माह के अंतिम कार्य दिवस पर दोपहर के पश्चात् 'स्किल डे' मनाने का निर्णय लिया है। इस आयोजन का उद्‌देश्य है बच्चों में स्वावलम्बन भावना का विकास करना।

दक्षता का विषय कक्षा के अनुसार प्रत्येक माह का अलग-अलग निर्धारित किया गया है। उदाहरण स्वरूप कक्षा 1 एवं 2 के बच्चों को पहले माह की पहली पाली में अपने जूते का फीता बांधना एवं दूसरे माह में 5 प्रकार की दालों की पहचान करना सिखाया गया। वहीं दोनों ही माह की द्वितीय पाली में बच्चों को स्वच्छता के प्रति एवं पर्यावरण के प्रति जागरुकता प्रदान की गई। इसी प्रकार कक्षा 3,4 एवं 5 के बच्चों के साथ कागज से लैंप निर्माण, मोमबत्ती बनाना, वृक्षारोपण करना, ग्रीटिंग कार्ड बनाना एवं पेंटिंग करने की दक्षता प्रदान की गई। इसी प्रकार कक्षा 6,7 एवं 8 की बहनों के साथ सिलाई करना, बटन लगाना, तुरपई करना, मिट्टी से मूर्तियाँ बनाना, बंधनवार बनाना आदि के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।

इसके अलावा 7वीं एवं 8वीं की छात्राओं को अच्छे आचरण के लिए एवं सैनिटरी नैपकीन के सही प्रयोग करने की कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। वास्तव में यह बच्चों में स्वावलंबन के लिए सुंदर प्रयोग है। देश के अन्य विद्यालयों को भी इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

समर्थ शिशु श्रीराम कथा : समाज प्रबोधन हेतु विद्या भारती का अभिनव प्रयोग

कहते हैं कि -भवन अच्छा चाहिए तो नींव की चिन्ता करो, फल अच्छा चाहिए तो बीज की चिन्ता करो।

यदि हम अपने देश को अच्छे नागरिक देना चाहते हैं तो निश्चित रूप से हमें श्रेष्ठ संतान उत्पत्ती के विषय में विचार करना ही होगा और यदि संतान श्रेष्ठ चाहिए तो हमें भ्रूण अर्थात् बीज की चिन्ता करनी ही होगी। तब ही इस देशरूपी भवन की नींव मजबूत होगी क्योंकि–

मनुष्यता शिशु के नन्हें पग से ही आगे बढ़ती है। हमारी वैदिक मान्यता भी यही है कि मनुष्य बनने के लिए शिक्षा देने का कार्य शिशु के जन्म के बाद नहीं बल्कि उसके जन्म लेने से पूर्व (जब नव दम्पत्ति, माता पिता बनने का विचार करते हैं) ही माता–पिता के द्वारा प्रारम्भ हो जाता है।

अत: समाज को सही दिशा देने हेतु ही इस कथा का आयोजन दिनांक 13 से 17 नवंबर 2018 तक (पाँच दिवसीय) माता लीलावंती सरस्वती विद्या मंदिर, हरिनगर, दिल्ली में किया गया।

इन पाँच दिवसीय कथा के विषय भी भावी शिशु के निर्माण के निमित्त ही समर्पित रहे :–

प्रथम दिवस : नव दम्पत्ति का शिक्षण।
द्वितीय दिवस : गर्भवती माता का शिक्षण।
तृतीय दिवस : जन्म से एक वर्ष के शिशु की माताओं का शिक्षण।
चतुर्थ दिवस : एक वर्ष से तीन वर्ष के शिशु की माताओं का शिक्षण।
पंचम दिवस : तीन से पाँच वर्ष के शिशु की माताओं का शिक्षण।

इस ज्ञान वर्षा हेतु श्री रामचरित मानस के मर्मज्ञ श्री श्याम स्वरूप जी मनावत, उज्जैन से हमारे बीच आए। अपनी ओजस्वी वाणी से मानस एवं श्रीमद् भगवत् गीता की लघु कथाओं को माध्यम बनाकर संबंधित विषयों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि दुनियाँ के पहले पुत्र का नाम 'उत्तानपाद' रखा गया था। उत्तान अर्थात् सिर और पाद अर्थात् पैर। सिर को उँचा उठाना और पैरों में गिर जाना, ये दोनों संभावनाएँ केवल मनुष्य के पास ही है और ये उसे परिवार के वातावरण से ही मिलती है।

व्यास पीठ पूजन श्री ललित बिहारी गोस्वामी (विद्या भारती के राष्ट्रीय महामंत्री) द्वारा किया गया। इस अवसर पर मा. हेमचन्द्र जी (राष्ट्रीय मंत्री) भी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेन्द्र चावला (महापौर), श्री अमरजीत सिंह (निगम पार्षद), श्री किरण चोपड़ा (निगम पार्षद), श्री के.एस.एन. बुद्धिराजा (ए.सी.पी.) के साथ–साथ समर्थ शिक्षा समिति के सभी अधिकारियों ने भी कथा में उपस्थित रहकर उत्साहवर्धन किया। कथा में प्रतिदिन 300 से अधिक श्रोताओं ने इस ज्ञान वर्षा में स्नान किया।

नम्रता दत्त
शिशुवाटिका सह प्रमुख, उत्तर क्षेत्र।

वि.भा. आंध्र प्रदेश द्वारा महाविद्यालयीन आचार्यों का एक दिवसीय सम्मेलन

विद्या भारती आंध्र प्रदेश द्वारा निर्देशित एक दिवसीय महाविद्यालयीन आचार्यों का सम्मेलन विशाखापट्टनम के वी. वी.के. कॉलेज में 24 नवंबर 2018 को संपन्न हुआ।

सम्मेलन का उद्धाटन विद्या भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री डी.यू. रामकृष्ण जी राव ने किया। अपने उद्‌बोधन में श्री राव ने कहा कि महाविद्यालय के आचार्यों को भी विद्या भारती को अपना समझकर उसके कार्यक्रमों को अपने कॉलेजों में भी करना आवश्यक है। इसके लिए सभी कॉलेजों में विद्या भारती की वंदना, संस्कृति ज्ञान परीक्षा, खेलकूद, विज्ञान मेला और सेवा कार्यक्रम जैसे संयुक्त कार्यक्रमों की योजना करनी चाहिए।

डॉ. राव ने आगे कहा कि शिक्षा व्यवस्था में मूल परिवर्तन हेतु हम सब को प्रयत्न करना होगा। हम अनेक वर्षो से विद्यालयों द्वारा शिक्षा में भारतीयकरण करने हेतु प्रयत्न कर रहें हैं, इसके आधार पर समाज को एक भारतीय नमूना दिखाना होगा। हमारे विद्यालय केवल शिक्षा तक ही सीमित न होकर शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का निर्माण करें।

समारोह के समापन में विद्या भारती दक्षिण मध्य क्षेत्र के अध्यक्ष डॉ. चामर्ति उमामहेश्वर राव (रिटायर्ड आई.ए.एस.) ने कहा कि सामाजिक बुराईयों और राष्ट्रीय विषयों पर भी कक्षा में छात्रों के बीच चर्चा करनी चाहिए।

इस सम्मेलन में विद्या भारती के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य प्रो. एन. राज्यलक्ष्मी, आंध्रप्रदेश के अध्यक्ष श्री एस. लक्ष्मीपति राजू व भारतीय विद्या केन्द्रम के अध्यक्ष प्रो. ए. नारायण स्वामी, संगठन मंत्री श्री हनुमंत राव और सह मंत्री श्री एस. सुब्बाराव के साथ-साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह श्री वेणु गोपाल नायडू व स्थानीय एम.एल.सी. श्री पी.वी.एन. माधव भी उपस्थित रहे। इसमें आंध्र प्रदेश के 10 महाविद्यालयों से 106 प्राध्यापकों ने भाग लिया।

विद्या भारती की बालिका शिक्षा परिषद् की बैठक सम्पन्न

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की बालिका शिक्षा परिषद् की बैठक दिनांक 23 से 25 नवंबर 2018 को मालवा प्रांत के केशव विद्यापीठ इंदौर में सम्पन्न हुई। इसमें अखिल भारतीय महिला समन्वय संयोजिका मा. गीता ताई गुंडे तथा तरुणी प्रमुख एवं विश्व विभाग सह प्रमुख राष्ट्र सेविका समिति की प्रचारिका सुश्री चंदा (भाग्य श्री) साठ्ये, बालिका शिक्षा प्रभारी मा. यतीन्द्र जी शर्मा की विशेष उपस्थिति रही। कुल 20 कार्यकर्ता बहनें उपस्थित रहीं।

बालिका शिक्षा परिषद् में गत वर्ष का कार्यवृत्त एवं आगामी वर्ष की कार्य योजना क्षेत्रश: बनाई गई। नूतन प्रकाशित पाठ्यक्रम एवं निर्देशिका का विस्तृत स्वाध्याय एवं चर्चा हुई। सभी क्षेत्रों ने पी.पी.टी. पर अपना कार्यवृत्त रखा। विशेष रूप से आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण विषय को लेकर बालिका, विद्यालय, मातृशक्ति, प्रबोधन स्तर पर क्या-क्या कर सकते हैं, उसकी विस्तृत चर्चा की गई।

बालिका शिक्षा की पूरे देश में सह शिक्षा विद्यालयों में कुछ गतिविधियाँ शुरु हुई है। परिवार प्रबोधन और बालिका के समग्र विकास के लिए केन्द्रीय विषय का क्रियान्वयन अच्छी तरह से हो, इसके लिए प्रांत एवं क्षेत्र स्तर पर महिला कार्यकर्ता की टोली का निर्माण करने के लिए आगामी वर्ष में योजना होगा। प्रांत में एक पुरुष कार्यकर्ता प्रभारी के रूप में समन्वय के संकलन का कार्य करे, ऐसा प्रयास हुआ।

मा. गीता ताई गुंडे ने सुझाव दिया कि सह जीवन (Co-Ed) की शैक्षिक गतिविधियाँ भी आवश्यक है और बालक-बालिकाओं दोनों को मिलकर करने वाले कार्य भी विद्यालय शिक्षा में सिखाना चाहिए। बदलते परिवेष में मिलकर कार्य करने की शिक्षा कैसे दे सकते हैं, इसके लिए बालिका शिक्षा के कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं:-

1. प्रांत स्तर पर एक पुरुष कार्यकर्ता बालिका शिक्षा का प्रभारी होना चाहिए।
2. प्रांत प्रमुख अथवा प्रदेश निरीक्षक ऐसा हो जो बालिका शिक्षा के संबंध में जानकारी प्राप्त करे एवं विद्यालय स्तर पर क्रियान्वयन करे।
3. बालिका शिक्षा में क्रियाशोध होना चाहिए।
4. पूर्व छात्राओं की सक्रियता कैसे बढ़े, उसकी योजना करना चाहिए।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की गतिविधियों को पहुँचाना।
6. स्वास्थ्य, कैरियर, जीवनशैली जैसे विषयों पर परामर्श की व्यवस्था बड़े विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए।
7. बालिका शिक्षा संबंधित पूछताछ प्रवासी कार्यकर्ता करें तो इस विषय को गति प्रदान हो सकती है।
8. वेकेशन का एक सप्ताह देश के लिये हो, ऐसी योजना बननी चाहिए।
9. बालिका, मातृशक्ति एवं परिवार में आधुनिकीकरण बनाम पश्चिमीकरण की वैचारिक स्पष्टता हो।

मा. यतीन्द्र जी शर्मा ने बालिका शिक्षा परिषद् के समापन में कहा कि -

1. विद्या भारती में 12 लाख बालिका के समग्र विकास के लिए संगठन में बालिका शिक्षा का स्वीकार हुआ है और गतिविधियाँ बढ़ी है।
2. प्रांत स्तर पर, संकुल स्तर पर महिला कार्यकर्ता की टोली बने जो नीचे तक बालिका शिक्षा का क्रियान्वयन कर सके।
3. विद्यालय स्तर पर विभिन्न विषयों की कन्या परिषद् की रचना हो।
4. परिवार व्यवस्था में जीवन जीने का बालिका का स्वभाव कैसे बने, उसका विचार हो।
5. बालिका में नैसर्गिक गुणों का विकास करके स्वार्थ को परमार्थ में बदलना होगा और वैश्विक चिंतन की ओर हम आगे बढ़ें।
6. बालिकाओं में राष्ट्रबोध, समाजबोध और अध्यात्मबोध कैसे हो।
7. हमारे सांस्कृतिक व ऐतिहासिक वीरांगना नारीयों के जीवन चरित्र बताकर गौरव और प्रेरणा का भाव कैसे जागृत हो। वर्तमान की प्रेरक बेटियों की जानकारी बालिका को देनी चाहिए।
8. बालिका जीन्स तो पहने, पर अपना जीन मत बदले।

रेखा चुड़ासमा, संयोजक बालिका शिक्षा, विद्या भारती।

किताबी शिक्षा के साथ संस्कार का ज्ञान भी जरूरी- राज्यपाल

बिहार के राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने दिनांक 04 दिसंबर 2018 को सरस्वती विद्या मंदिर, हसनपुर में वार्षिकोत्सव कार्यक्रम 'अंतराग्नि' का उद्घाटन किया। महामहिम ने कहा कि यहाँ आकर उन्हें उनका बचपन याद आ गया। उन्होंने कहा कि शिक्षा देश को बनाने में सबसे बड़ा उपकरण है। केवल किताबों से शिक्षा नहीं मिल सकती है, इसके लिए संस्कार का ज्ञान भी जरूरी है। बच्चों में अनेक तरह की शिक्षा का यहाँ पर बीजारोपण किया जाता है। यह काफी बेहतर है। भारत आध्यात्मिक देश है। पहले भी यहाँ आश्रम में शिक्षा दी जाती थी। इस विद्यालय की शिक्षा भी कुछ उसी तरह से है। एक जगह पर इतनी पद्धति की शिक्षा मिलना काफी बेहतर है। संगीत, संस्कृति, संस्कार व वादन सभी प्रकार की शिक्षा से पूर्ण हैं ये बच्चे। ये बच्चे जहाँ भी जाएंगे वहाँ के लोगों को प्रभावित करेंगे। उन्होंने कहा कि देश में कई ऐसे विद्यालय हैं, जिसमें पूरी संपूर्णता के साथ पढ़ाई की जाती है। कॉन्वेंट स्कूलों में तो पढ़ाने की इच्छा सभी अभिभावकों की होती है, पर वे बच्चे पढ़कर नौकरी तो पा सकते हैं, पर उनमें भारतीय संस्कार की कमी होती है। किताबी ज्ञान से तो डिग्री व नौकरी तो मिलती है, पर संस्कार नहीं। सरस्वती विद्या मंदिर जैसे संस्थान के बच्चे का भविष्य काफी उज्ज्वल है। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के पूर्व महामंत्री व विद्यालय के सचिव श्री रमेन्द्र राय ने कहा कि शिक्षा ऐसी हो, जिसमें भारतीय संस्कृति एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से युक्त हो। बच्चों द्वारा व्यायाम, योग, ताईक्वांडो, बैंड वादन, सरस्वती वंदना सहित अन्य तरह के कार्यक्रमों ने सबको प्रभावित किया। इस मौके पर स्कूल के निदेशक जागृत भानु प्रकाश व कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री सिद्धनाथ सिंह एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र कार्यवाह डॉ. मनमोहन सिंह उपस्थित रहे।

विद्याभारती संकुल संवाद
Date of publishing : 20 December, 2018
Total No. of Pages : 8

RNI No. : DELBIL/2005/15122
D.L. No. : DL (S)-01/3362/2016-18
Date of Posting -24-25 December, 2018

Seminar on "Improving Learning Outcomes at Elementary School Stage, From Theory to Action" in Cuttack

The emphasis on quality of education at present has been considered in terms of desirable characterstics of learners, learning process, learning materials & learning outcomes. Providing quality education, resulting in weak learning outcomes at elementary stage of education is the emerging challenge for indian education. With this backdrop, a two day National Seminar on "Improving Learning Outcomes at Elementary School Stage: From Theory to Action" was organised on 13th & 14th October, 2018 at Saraswati Shishu Vidya Mandir, Gatiroutpatna, Cuttack.

85 participants from various parts of the country registered for the deliberation and participation. Around 40 papers were presented in the two days.

The inaugural session was started with the august presence of Prof. Dr. P.C. Agrawal, Principal, RIE, Bhubaneswar as Chief Guest, D. Ramakrushna Rao, Vice President, Vidya Bharati as chief Speaker, Dr. Laxmidhar Behera, Associate prof. RIE, Bhubaneswar, as keynote speaker, Dr. Saroj Kumar Hati, Convenor of National Seminar, SVS, Odisha and presided over by Dr. Kishore Chandra Mohanty, Joint Secretary, Vidya Bharati.

A book "Quality, Equity and Inclusivenes in School Education - Vision, Policy and Implementation Issues" based on the procedings of the last year Seminar was unveiled by the guests and Dr. Sidhanath Sahoo, the co-ordinator of the seminar put forth a brief description on the book.

Focussing on the practical aspect of enhancing learning outcomes Dr. L. Behera in his keynote address hilighted the diversities and disparties of learning outcomes in national perperspective and emphasized the scholarstic and non-scholarstic achievement of students with regard to learning outcomes & concluded with the gist "quantity to be entertained but quality never to be compromised"

In the inaugural address by Prof. P.C. Agrawal, Principal RIE, Bhubaneswar as the chief guest of the occasion deliberated various strategies like constructive approach continous compresensice evaluation competency based evaluation with its relevance in improving the learning outcome in cognitive & affective domain of learning.

Starting from the philosophical standpoint of educational environment of gurukulas, D. Ramakrishna Rao as chief speaker focussed on learning outcomes with special reference to various committe & commissions of post indeopencece period. He also emphased on the emerging trend of Indian Educational network to be enthused empowered & strengthen and hilighed the attitude & dedication of teachers for improving learning outcomes.

Citing some mythological characters of Indian epics Dr. K. Mohanty in his presidential address enlighted the participants about the qualities of the students such as competency, character building, descipline and imbibing those among the teachers with an objective to enhance the learning outcomes.

The vote of thanks was given by Dr. Tarulata Devi, Asst. Professor in Education and member of SVS, Odisha.

The first technical session began with Prof. Dr. Latika Mishra, Asst. Regional Director, IGNOU, Koraput as Chair person, Dr. Geetanjali Mohanty, Faculty of BEd. Ravenshaw University, as Co-Chair person and Dr. Krupasindu Karan, Head, Department in Education, Prajamandal Mahila Mahavidyalaya, Nayagarh as rapporteur. 8 Papers have been presented in this session.

The Second Technical session started with the Chairmanship of Dr. Tarulata Devi Asst. Prof. in Education, P.P. college, Nischintakoili accompained by Dr. Gyanendra Rout, Asst. Prof. in Education, GNT University, Amarkantak, Madhya Pradesh as Co-Chairman and Priay Ranjan Mohapatra RIE, Bhubaneswar as rapporteur. In this session 11 papers have been presented.

On the second day the seminar had two parelal sessions - the 3rd technical session started with the chairmanship of Dr. Sudarshan Mishra, Head, School of Education, Ravenshaw University , accompained by co- chair person Dr. B.c. Das Asst. Prof. Ravenshaw University and Dr. Sabita rani Mishra Asst Prof, Ravenshaw Junior College as rapporteur. 13 Papers have been presented in this session.

Simultaneously fourth technical session was chaired by Dr. S.P. Mohanty, Asst. Prof. Ramadevi University, BBSR, with co-chairperson Dr. Krupasindu Karan, Head, Department in Education, Prajamandal Mahila Mahavidyalaya, Nayagarh and Dr. Jyagyaseni Mohapatra, Asst. Prof. Chatrapur, Mahila Degree College, Ganjam as rapporture. 11 Papers have been presented in this session.

सेवा में

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री ललित बिहारी गोस्वामी, महामंत्री, विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065, के लिए हिन्दुस्तान ऑफसेट प्रेस, ए-26, नारायणा इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित एवं विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065 से प्रकाशित। **संपादक :** श्री ललित बिहारी गोस्वामी, फोन : 011-29840013